Important snaps by Team PIS Class- XIth

SUBJECT: HINDI CORE

CHAPTER: काव्य भाग- हम तौ एक एक करि जांनां, संतों देखत जग बौराना

TEACHER: SAVITA SINGH

Highlights from chapter 1

- **प्रश्न :**
  कबीर की दृष्टि में ईश्वर एक है। इसके समर्थन में उन्होंने क्या तर्क दिए हैं?

- **उत्तर-**
  कबीर ने एक ही ईश्वर के समर्थन में अनेक तर्क दिए हैं, जो निम्नलिखित हैं
- संसार में सब जगह एक ही पवन व जल है।
- सभी में एक ही ईश्वरीय ज्योति है।
- एक ही मिट्टी से सभी बर्तनों का निर्माण होता है।
- एक ही परमात्मा का अस्तित्व सभी प्राणों में है।
- प्रत्येक कण में ईश्वर है।
- दुनिया के हर जीव में ईश्वर व्याप्त है।

-
- **प्रश्न :**
  मानव शरीर का निर्माण किन पंच तत्वों से हुआ है?
- **उत्तर-**
  मानव शरीर का निर्माण निम्नलिखित पाँच तत्वों से हुआ है-
- अग्नि
- वायु
- पानी
- मिट्टी
- आकाश

- **प्रश्न :**
  कबीर ने नियम और धर्म का पालन करने वाले लोगों की किन कमियों की ओर संकेत किया है?

- **उत्तर-**
  कबीर ने नियम और धर्म का पालन करने वाले लोगों की निम्नलिखित कमियों की ओर संकेत किया है-

- **1.** प्रात:काल स्नान करने वाले, पत्थरों, वृक्षों की पूजा करने वाले अंधविश्वासी हैं। वे धर्म के सच्चे स्वरूप को नहीं पहचान पाते तथा आत्मज्ञान से वंचित रहते हैं।
  2. मुसलमान भी पीर-औलिया की बातों का अनुसरण करते हैं। वे मंत्र आदि लेने में विश्वास रखते हैं। ईश्वर सबके हृदय में विद्यमान है, परंतु ये उसे पहचान नहीं पाते।

- **प्रश्न :**
  ‘सतों देखो जग बौराना-पद का प्रतिपादय स्पष्ट करें।

- **उत्तर-**
  इस पद में कबीर ने बाहय आडंबरों पर चोट की है। वे कहते हैं कि अधिकतर लोग अपने भीतर की ताकत को न पहचानकर अनजाने में अवास्तविक संसार से रिश्ता बना बैठते हैं और वास्तविक संसार से बेखबर रहते हैं। कबीरदास कहते हैं कि यह संसार पागल हो गया है। यहाँ सच कहने वाले का विरोध तथा झूठ पर विश्वास किया जाता है। हिंदू और मुसलमान राम और रहीम के नाम पर लड़ रहे हैं, जबकि दोनों ही ईश्वर का मर्म नहीं जानते। दोनों बाहय आडंबरों में उलझे हुए हैं। नियम, धर्म, टोपी, माला, छाप, तिलक, पीर, औलिया, पत्थर पूजने वाले और कुरान की व्याख्या करने वाले खोखले गुरु-शिष्यों को आडंबर बताकर उनकी निंदा की गई है।

CHAPTER : 2- काव्य भाग – मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई, पग घुँघरू बाधि मीरां नाची

- **प्रश्न :**
  मीरा कृष्ण की उपासना किस रूप में करती हैं? वह रूप कैसा है?

- **उत्तर-**
  मीरा कृष्ण की उपासना पति के रूप में करती हैं। उसका रूप मन मोहने वाला है। वे पर्वत को धारण करने वाले हैं। उनके सिर पर मोरपंखी मुकुट है। इस रूप को अपना मानकर वे सारे संसार से विमुख हो गई हैं।

- **प्रश्न :**
  लोग मीरा को बावरी क्यों कहते हैं?

- **उत्तर-**
  दीवानी मीरा कृष्ण भक्ति में अपनी सुध-बुध खो चुकी है। उसे संसार की किसी परंपरा, रीति-रिवाज, मर्यादा अथवा लोक-लाज का ध्यान नहीं है। इसीलिए लोग उसे बावरी कहते हैं। संसारी लोग मीरा की भक्ति की पराकाष्ठा को पागलपन मानते हैं। मीरा राजसी वैभव और सुख को ठुकराकर कृष्ण भजन गाती हुई घूम रही है। ऐसा कार्य तो कोई पागल ही कर सकता है।

- **प्रश्न :**
  'पग धुंधरू बाँध मीरा नाची'-पद का प्रतिपादय बताइए।

- **उत्तर-**
  इस पद में प्रेम रस में डूबी हुई मीरा सभी रीति-रिवाजों और बंधनों से मुक्त होने और गिरिधर के स्नेह के कारण अमर होने की बात कर रही हैं। मीरा पैरों में धुंघरू बाँधकर कृष्ण के सामने नाचती है। लोग इस हरकत पर उन्हें बावरी कहते हैं तथा कुल के लोग उन्हें कुलनाशिनी कहते हैं। राणा ने उन्हें मारने के लिए विष का प्याला भेजा जिसे उसने हंसते हुए पी लिया। मीरा कहती हैं कि उसके प्रभु कृष्ण सहज भक्ति से भक्तों को मिल जाते हैं।

- **प्रश्न :**
  मीरा ने 'सहज मिले अविनासी' क्यों कहा है?

- **उत्तर-**
  मीरा के अनुसार कृष्ण का जो रूप, जो संबंध (पति) उन्होंने पाया वह बिलकुल सहजता से, बिना किसी बाह्याडंबर के मीरा की व्यक्तिगत अनुभूति रही। अतः मीरा ने उन्हें 'सहज मिले अविनासी' कहा है।

- **प्रश्न :**
  'मेरे तो गिरधर गोयाल'-पद का भाव स्पष्ट करें।

- **उत्तर-**
  इस पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति अपनी अनन्यता तथा व्यर्थ के कार्यों में व्यस्त लोगों के प्रति दुख प्रकट किया है। वे कहती हैं कि मोर मुकुटधारी गिरिधर कृष्ण ही उसके स्वामी हैं। कृष्ण-भक्ति में उसने अपने कुल की मर्यादा भी भुला दी है। संतों के पास बैठकर उसने लोकलाज खो दी है। आँसुओं से सींचकर उसने कृष्ण प्रेम रूपी बेल बोयी है। अब इसमें आनंद के फल लगने लगे हैं। उसने दही से घी निकालकर छाछ छोड़ दिया। संसार की लोलुपता देखकर मीरा रो पड़ती हैं। वे कृष्ण से अपने उद्धार के लिए प्रार्थना करती हैं।

CHAPTER : 3 - वे आँखें

- **प्रश्न :**
कविता में किसान की पीड़ा के लिए किन्हें जिम्मेदार बताया गया है?

- **उत्तर-**
कविता में किसान की पीड़ा के लिए जमींदार, महाजन व कोतवाल को जिम्मेदार बताया है। जमींदार ने षड्यंत्रों से उसे जमीन से बेदखल कर दिया। उसके कारिंदों ने किसान के जवान बेटे की पीट-पीटकर हत्या कर दी। महाजन ने मूलधन व ब्याज की वसूली के लिए उसके घर, बैल, गाय तक नीलाम करवा दिए। आर्थिक अभाव के कारण इलाज न करवा पाने की वजह से किसान की पत्नी मर गई। कोतवाल ने अपनी वासना की पूर्ति के लिए उसकी पुत्रवधू को शिकार बनाया। पीड़ा एवं लज्जा के कारण उसकी पुत्रवधू ने आत्महत्या कर ली। समाज उस पर होने वाले अत्याचारों को मूक दर्शक बनकर देखता रहा।

- **प्रश्न :**
किसान के रोदन को 'नीरव' क्यों कहा गया है?

- **उत्तर-**
कवि किसान की दयनीय स्थिति का वर्णन करता है। उसकी आँखें अंधकार की गुफा के समान हैं। उनमें दारुण दुख भीतर तक समाया हुआ है। उसकी आँखों में उसी दुख की छाया के रूप में रोने का भाव अनुभव किया जा सकता है। उसका रोदन नीरव है, क्योंकि किसान की आँखों से ही उसकी पीड़ा को महसूस किया जा सकता है। उसके ऊपर हुए अत्याचारों की झलक आँखों से मिलती है।

- **प्रश्न :**
  पुत्र और पुत्रवधू के प्रति किसान का क्या वृष्टिकोण था?

- **उत्तर-**
  किसान पुत्र को अधिक महत्व देता है। उसकी याद के कारण उसकी छाती फटने लगती है तथा साँप लोटने लगता है। वह उसे अपना प्रमुख सहारा समझता था। पुत्रवधू को पुत्र के जीवित रहते हुए ही सम्मान मिलता था। पुत्र के मरने के बाद वह उसे पति घातिनी कहने लगा। वह स्त्री को पैर की जूती के समान समझता है। उसकी मान्यता है कि एक स्त्री जाती है तो दूसरी आ जाती है।

CHAPTER : 4 - घर की याद

- **प्रश्न :**
पानी के रात भर गिरने और प्राण-मन के धिरने में परस्पर क्या संबंध है?

- **उत्तर –**
'घर की याद' का आरंभ इसी पंक्ति से होता है कि 'आज पानी गिर रहा है। इसी बात को कवि कई बार अलग-अलग ढंग से कहता है-'बहुत पानी गिर रहा है', 'रात भर गिरता रहा है। भाव यह है कि सावन की झड़ी के साथ-साथ 'घर की यादों' से कवि का मन भर आया है। प्राणों से प्यारे अपने घर को, एक-एक परिजन को, माता-पिता को याद करके उसकी आँखों से भी पानी गिर रहा है। वह कहता है कि 'घर नज़र में तैर रहा है। बादलों से वर्षा हो रही है और यादों से घिरे मन का बोझ कवि की आँखों से बरस रहा है।

- **प्रश्न :**
मायके आई बहन के लिए कवि ने घर को 'परिताप का घर' क्यों कहा है?

- **उत्तर –**
कवि ने बहन के लिए घर को परिताप का घर कहा है। बहन मायके में अपने परिवार वालों से मिलने के लिए खुशी से आती है। वह भाई-बहनों के साथ बिताए हुए क्षणों को याद करती है। घर पहुंचकर जब उसे पता चलता है कि उसका एक भाई जेल में है तो वह बहुत दुखी होती है। इस कारण कवि ने घर को परिताप का घर कहा है।

- **प्रश्न :**
  'घर की याद' कविता का प्रतिपादय लिखिए।

- **उत्तर –**
  इस कविता में घर के मर्म का उद्‌घघाटन है। कवि को जेल-प्रवास के दौरान घर से विस्थापन की पीड़ा सालती है। कवि के स्मृति-संसार में उसके परिजन एक-एक कर शामिल होते चले जाते हैं। घर की अवधारणा की सार्थक और मार्मिक याद कविता की केंद्रीय संवेदना है। सावन के बादलों को देखकर कवि को घर की याद आती है। वह घर के सभी सदस्यों को याद करता है। उसे अपने भाइयों व बहनों की याद आती है। उसकी बहन भी मायके आई होगी। कवि को अपनी अनपढ़, पुत्र के दुख से व्याकुल, परंतु स्नेहमयी माँ की याद आती है। वह सावन को दूत बनाकर अपने माता-पिता के पास अपनी कुशलक्षेम पहुँचाने का प्रयास करता है ताकि कवि के प्रति उनकी चिंता कम हो सके।

CHAPTER : 5 - गजल

- **प्रश्न :**
'दरख्तों का साया' और 'धूप' का क्या प्रतीकार्थ है?

- **उत्तर –**
'दरख्तों का साया' का अर्थ है-जनकल्याण की संस्थाएँ। 'धूप' का अर्थ है-कष्ट। कवि कहना चाहता है कि भारत में संस्थाएँ लोगों को सुख देने की बजाय कष्ट देने लगी हैं। वे भ्रष्टाचार का अड्डा बन गई हैं।
- **प्रश्न :**
'सिल दे जुबान शायर की' पंक्ति का आशय स्पष्ट करें।

- **उत्तर –**
कवि का आशय यह है कि कुशासन के विरोध में जब शायर विरोध करता है तो उसे कुचल दिया जाता है। उसकी रचनाओं पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है। सत्ता अपने खिलाफ विद्रोह का स्वर नहीं सुनना चाहती।

CHAPTER : 6 - आओ, मिलकर बचाएँ

- **प्रश्न :**
'माटी का रंग' प्रयोग करते हुए किस बात की ओर संकेत किया गया है?

- **उत्तर –**
कवयित्री ने 'माटी का रंग' शब्द का प्रयोग करके यह बताना चाहा है कि संथाल क्षेत्र के लोगों को अपनी मूल पहचान को नहीं भूलना चाहिए। वह इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशेषताएँ बचाए रखना चाहता है। क्षेत्र की प्रकृति, रहन-सहन, अक्खड़ता, नाच गाना, भोलापन, जुझारूपन, झारखंडी भाषा आदि को शहरी प्रभाव से दूर रखना ही कवयित्री का उद्देश्य है।

- **प्रश्न :**
भाषा में झारखंडीपन से क्या अभिप्राय है?

- **उत्तर –**
इसका अभिप्राय है-झारखंड की भाषा की स्वाभाविक बोली, उनका विशिष्ट उच्चारण। कवयित्री चाहती है कि संथाली लोग अपनी भाषा की स्वाभाविक विशेषताओं को नष्ट न करें।

- **प्रश्न :**
‘इस दौर में भी बचाने को बहुत कुछ बचा है’-से क्या आशय है?

- **उत्तर –**
‘इस दौर में भी’ का आशय है कि वर्तमान परिवेश में पाश्चात्य और शहरी प्रभाव ने सभी संस्कारपूर्ण मौलिक तत्वों को नष्ट कर दिया है, परंतु कवयित्री निराश नहीं है, वह कहती है कि हमारी समृद्ध परंपरा में आज भी बहुत कुछ शेष है। आओ हम उसे मिलकर बचा लें। यही इस समय की माँग है। लोगों का विश्वास, उनकी टूटती उम्मीदों को जीवित करना, सपनों को पूरा करना आदि को सामूहिक प्रयासों से बचाया जा सकता है।

- **प्रश्न :**
बस्तियों को शहर की किस आबो-हवा से बचाने की आवश्यकता है?

- **उत्तर –**
शहरों में भावनात्मक जुड़ाव, सादगी, भोलापन, विश्वास और खिलखिलाती हुई हँसी नहीं है। इन कमियों से बस्तियों को बचाना बहुत जरूरी है। शहरों के प्रभाव में आकर ही दिनचर्या ठंडी होती जा रही है और जीवन की गर्माहट घट रही है। जंगल कट रहे हैं और आदिवासी लोग भी शहरी जीवन को अपना रहे हैं। बस्ती के आँगन भी सिकुड़ रहे हैं। नाचना-गाना, मस्ती भरी जिंदगी को शहरी प्रभाव से बचाना ज़रूरी है।

- **प्रश्न :**
  लेखिका के प्रकृतिक परिवेश में कौन-से सुखद अनुभव हैं?

- **उत्तर –**
  लेखिका ने संथाल परगने के प्राकृतिक परिवेश में निम्नलिखित सुखद अनुभव बताए हैं-
- जगल की ताजा हवा
- नदियों का निर्मल जल
- पहाडीं की शांति
- गीतों की मधुर धुनें
- मिट्टी की स्वाभाविक सुगंध
- लहलहाती फसलें कीजिए

गद्य भाग - CHAPTER : 1 – नमक का दारोगा

- **प्रश्न :**
  कहानी का कौन-सा पात्र आपको सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

- **उत्तर-**
  इस कहानी में मुंशी वंशीधर मुझे सर्वाधिक प्रभावित करते हैं, क्योंकि वे ईमानदार, कर्तव्य परायण, कठोर, बेमुरौवत और धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे। उनके घर की आर्थिक दशा बहुत खराब थी पर फिर भी उनका ईमान नहीं डगमगाया। उनके पिता ने उन्हें ऊपरी आय पर नजर रखने की नसीहत दी, पर वे सत्य के मार्ग पर अडिग खड़े रहे। आज देश को ऐसे कर्मियों की जरूरत है जो बिना लालच के सत्य के मार्ग पर अडिग खड़े रहें जो परिणाम का बेखौफ़ होकर सामना कर सकें।

- **प्रश्न :**
  'नमक का दरोगा' कहानी में पंडित अलोपीदीन के व्यक्तित्व के कौन-से दो पहलू (पक्ष) उभरकर आते हैं?

- **उत्तर-**
  पंडित अलोपीदीन के दो पहलू सामने आते हैं-

- **(क)** लक्ष्मी के उपासक-पंडित अलोपीदीन लक्ष्मी के उपासक हैं। वे लक्ष्मी को सर्वोच्च मानते हैं। उन्होंने अदालत में सबको खरीद रखा है। वे कुशल वक्ता भी हैं। वाणी व धन से उन्होंने सबको वश में कर रखा है। इसी कारण वे नमक का अवैध धंधा करते हैं। वंशीधर द्वारा पकड़े जाने पर वे अदालत में धन के बल पर स्वयं को रिहा करवा लेते हैं और वंशीधर को नौकरी से हटवा देते हैं।
  (ख) ईमानदारी के कायल-कहानी के अंत में इनका उज्ज्वल रूप सामने आता है। वे वंशीधर की ईमानदारी के कायल हैं। ऐसा व्यक्ति उन्हें सरलता से नहीं मिल सकता था। वे स्वयं उनके घर पहुँचे और उसे अपनी सारी जायदाद का स्थायी मैनेजर बना दिया। उन्हें अच्छा वेतन व सुविधाएँ देकर मान-सम्मान बढ़ाया। उनके स्थान पर आम व्यक्ति तो सदा बदला लेने की बात ही सोचता रहता।

- **प्रश्न .**
  वंशीधर के पिता ने उसे कौन-कौन-सी नसीहतें दीं?

- **उत्तर-**
  वंशीधर के पिता ने उसे निम्नलिखित बातों की नसीहतें दीं-
- **(क)** ओहदे पर पीर की मज़ार की तरह नज़र रखनी चाहिए।
  (ख) मज़ार पर आने वाले चढ़ावे पर ध्यान रखो।
  (ग) जरूरतमंद व्यक्ति से कठोरता से पेश आओ ताकि धन मिल सके।
  (घ) बेगरज आदमी से विनम्रता से पेश आना चाहिए, क्योंकि वे तुम्हारे किसी काम के नहीं।
  (ङ) ऊपर की कमाई से समृद्ध आती है।

CHAPTER : 2 - मियाँ नसीरूद्दीन

- **प्रश्न :**
मियाँ नसीरुददीन को नानबाइयों का मसीहा क्यों कहा गया है?

- **उत्तरु-**
मियाँ नसीरुद्दीन को नानबाइयों का मसीहा कहा गया है क्योंकि वे मसीहाई अंदाज से रोटी पकाने की कला का बखान करते थे। वे नानबाई हुनर में माहिर थे। उन्हें छप्पन तरह की रोटियाँ बनानी आती थी। यह तीन पीढ़ियों से उनका खानदानी पेशा था। उनके दादा और पिता बादशाह सलामत के यहाँ शाही बावर्ची खाने में बादशाह की खिदमत किया करते थे। मियाँ रोटी बनाने को कला मानते हैं तथा स्वयं को उस्ताद कहते हैं। उनका बातचीत करने का ढंग भी महान कलाकारों जैसा है।

- **प्रश्न :**
तालीम की तालीम ही बड़ी चीज़ होती है-यहाँ लेखिका ने तालीम शब्द का दो बार प्रयोग क्यों किया है? क्या आप दूसरी बार आए तालीम शब्द की जगह कोई अन्य शब्द रख सकते हैं? लिखिए।

- **उत्तर-**
यहाँ 'तालीम' शब्द का दो बार प्रयोग किया गया है। पहले 'तालीम' का अर्थ है-शिक्षा या प्रशिक्षण। दूसरे 'तालीम' का अर्थ है-पालन करना या आचरण करना। इसका अर्थ यह है कि जो शिक्षा पाई जाए, उसका पालन करना अधिक जरूरी है। दूसरी बार आए तालीम की जगह हम 'पालन' शब्द भी लिख सकते हैं।

- **प्रश्न :**
  मियाँ ने पढ़ाई के कितने तरीके बताए हैं?

- **उत्तर-**
  मियाँ ने पढ़ाई के दो तरीके बताएँ हैं-पहला किताबी, दूसरा व्यावहारिक। पहले तरीके में उस्ताद चेले को एक-एक शब्द का उच्चारण करवाकर पढ़ाता है। दूसरे तरीके में काम करते हुए सिखाया जाता है। इसमें छोटे काम पहले करवाए जाते हैं, फिर बड़े काम सिखाए जाते हैं।

CHAPTER : 5 - गलता लोहा

- **प्रश्न :**
  धनराम मोहन को अपना प्रतिदवंदवी क्यों नहीं समझता था?

- **उत्तर-**
  धनराम के मन में नीची जाति के होने की बात बचपन से बिठा दी गई थी। दूसरे, मोहन कक्षा में सबसे होशियार था। इस कारण मास्टर जी ने उसे कक्षा का मॉनीटर बना दिया था। तीसरे, मास्टर जी कहते थे कि एक दिन मोहन बड़ा आदमी बनकर स्कूल और उनका नाम रोशन करेगा। उसे भी मोहन से बहुत आशाएं थीं। इन सभी कारणों से वह मोहन को अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं समझता था।

- **प्रश्न :**
  मोहन के लखनऊ आने के बाद के समय को लेखक ने उसके जीवन का एक नया अध्याय क्यों कहा है?

- **उत्तर-**
  लेखक ने मोहन के लखनऊ प्रवास को उसके जीवन का एक नया अध्याय कहा है। यहाँ आने पर उसका जीवन बँधी-बँधाई लीक पर चलने लगा था। वह सुबह से शाम तक नौकर की तरह काम करता था। नए वातावरण व काम के बोझ के कारण मेधावी छात्र की प्रतिभा कुंठित हो गई। उसके उज्ज्वल भविष्य की कल्पनाएँ नष्ट हो गई। अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए उसे कारखानों और फैक्ट्रियों के चक्कर लगाने पड़े। उसे कोई काम नहीं मिल सका।

- **प्रश्न :**
  मास्टर त्रिलोक सिंह के किस कथन को लेखक ने ज़बान के चाबुक कहा है और क्यों?

- **उत्तर-**
  एक दिन धनराम को तेरह का पहाड़ा नहीं आया तो आदत के अनुसार मास्टर जी ने संटी मँगवाई और धनराम से सारा दिन पहाड़ा याद करके छुट्टी के समय सुनाने को कहा। जब छुट्टी के समय तक उसे पहाड़ा याद न हो सका तो मास्टर जी ने उसे मारा नहीं वरन् कहा कि "तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ?" यही वह कथन था जिसे पाठ में लेखक ने जबान के चाबुक कहा है, क्योंकि धनराम एक लोहार का बेटा था और मास्टर जी का यह कथन उसे मार से भी अधिक चुभ गया। जैसा कि कहा भी जाता है 'मार का घाव भर जाता है, पर कड़वी जबान का नहीं भरता'। यही धनराम के साथ हुआ और निराशा के कारण वह अपनी पढ़ाई आगे जारी नहीं रख सका।

- **प्रश्न :**
  कहानी में चित्रित सामाजिक परिस्थितियाँ बताइए।

- **उत्तर-**
  कहानी में गाँव के परंपरागत समाज का चित्रण किया गया है। ब्राहमण टोले के लोग स्वयं को श्रेष्ठ समझते थे तथा वे शिल्पकार के टोले में उठते-बैठते नहीं थे। कामकाज के कारण शिल्पकारों के पास जाते थे, परंतु वहाँ बैठते नहीं थे। उनसे बैठने के लिए कहना भी उनकी मर्यादा के विरुद्ध समझा जाता था। मोहन कुछ वर्ष शहर में रहा तथा बेरोजगारी की चोट सही। गाँव में आकर वह इस व्यवस्था को चुनौती देता है।

CHAPTER : 6 - स्पीति में बारिश

- **प्रश्न :**
  स्पीति के लोग जीवनयापन के लिए किन कठिनाइयों का सामना करते हैं?

- **उत्तर-**
  स्पीति का जीवन बहुत कठोर है। यहाँ लंबी शीत ऋतु होती है। आठ-नौ महीने यह क्षेत्र शेष विश्व से कटा रहता है। यहाँ जलाने के लिए लकड़ी भी नहीं होती। लोग ठंड से ठिठुरते रहते हैं। यहाँ न हरियाली है और न ही पेड़। यहाँ पर्याप्त वर्षा भी नहीं होती। यहाँ साल में एक ही फसल उगा सकते हैं। जौ, गेहूँ, मटर व सरसों के अलावा दूसरी फसल नहीं हो सकती। किसी प्रकार का फल व सब्जियाँ पैदा नहीं होतीं। यहाँ रोजगार के साधन नहीं हैं। यहाँ की जमीन खेती योग्य है, परंतु सिंचाई के साधन विकसित नहीं हैं। अत: यहाँ के लोग अत्यंत जटिल परिस्थिति में रहते हैं।

- **प्रश्न :**
  लेखक माने श्रेणी का नाम बौदधों के माने मंत्र के नाम पर करने के पक्ष में क्यों है?

- **उत्तर-**
  माने श्रेणी के विषय में लेखक स्वयं प्रश्न करता है कि इसका क्या अर्थ है? और फिर स्वयं ही अनुमानित करता है कि कहीं यह बौद्धों के माने मंत्र के नाम पर तो नहीं है? 'ओं मणि पद्मे हुँ' इनका बीज मंत्र है। लेखक इसे बौद्धों का बीज मंत्र और संक्षेप में माने कहकर पाठक के समक्ष यह तथ्य रखता है कि इस श्रेणी में माने मंत्र का बहुत अधिक जाप हुआ है और उसे ध्यान में रखते हुए इस श्रेणी का नाम माने ही दे डालना चाहिए।

- **प्रश्न :**
  ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं-इस पंक्ति के माध्यम से लेखक ने युवा वर्ग से क्या आग्रह किया है?

- **उत्तर-**
  लेखक ने बताया है कि माने पर्वत श्रेणियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गई हैं, क्योंकि उनके जाप से यहाँ का वातावरण बोझिल व नीरस हो गया है। लेखक पहाड़ों व मैदानों से युवक-युवतियों को बुलाना चाहता है ताकि वे यहाँ आकर क्रीड़ा-कौतुक करें, प्रेम के खेल खेलें, जिससे यहाँ के वातावरण में ताजगी व उत्साह का संचार हों। चोटियों पर चढ़ने से जीवन औगड़ाई लेने लगेगा। युवाओं के अट्टहास से चोटियों पर जमा आर्तनाद पिघलेगा।

- **प्रश्न :**
  वर्षा यहाँ एक घटना है, एक सुखद संयोग हैं-लेखक ने ऐसा क्यों कहा है?

- **उत्तर-**
  स्पीति में वर्षा नहीं होती। वहाँ के लोग वर्षा की आनंददायक स्थितियों से अनभिज्ञ हैं। यहाँ वर्षा ऋतु मन की साध पूरी नहीं करती। यहाँ की धरती सूखी, ठंडी और वंध्या रहती है। स्पीति में साल में केवल एक फ़सल होती है। सिंचाई का साधन है-पहाड़ों से आ रहे नाले। उपजाऊ और खेती के योग्य धरती का तो यहाँ अभाव नहीं है, परंतु वर्षा नहीं होती। वर्षा यहाँ के लोगों के लिए एक घटना है। इसीलिए लेखक ने इसे एक सुखद संयोग माना है। स्पीति की यात्रा के दौरान वहाँ की वर्षा देखने का सौभाग्य भी लेखक को मिला था। स्थानीय लोगों ने भी इसी कारण लेखक की यात्रा को शुभ कहा था।

- **प्रश्न :**
  शिव का अट्टहास नहीं, हिम का आर्तनाद है। स्पष्ट कीजिए।

- **उत्तर-**
  लेखक बताता है कि पहाड़ के शिखरों पर जो बर्फ जमी होती है, उसे शिव की तेज हँसी का कारण माना जाता है, परंतु स्पीति में यह मान्यता लागू नहीं होती। यहाँ बर्फ कष्टों का प्रतीक है। जीवन में इतने अभाव हैं कि यहाँ दर्द के सिवाय कुछ नहीं है। यही चीख-पुकार, दर्द बर्फ के रूप में जमा हो गया है। प्रश्न

CHAPTER : 8 - जामुन का पेड़

- **प्रश्न :**
  कृषि-विभाग वालों ने मामले को हॉर्टीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिया?

- **उत्तर-**
  कृषि-विभाग ने मामला हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट को ही सौंपते हुए लिखा-"क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट अनाज और खेती-बाड़ी के मामलों में फैसला करने का हकदार है। जामुन का पेड़ चूँकि एक फलदार पेड़ है। इसलिए यह पेड़ हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।

- **प्रश्न :**
  जामुन का पेड़ गिरा देखकर क्लर्क ने क्या प्रतिक्रिया की?

- **उत्तर-**
  लॉन में जामुन का पेड़ गिर गया। उसे देखकर क्लर्क को दुख हुआ, क्योंकि अब उसे उसके मीठे फल खाने को नहीं मिलेंगे। उसे पेड़ के नीचे दबे व्यक्ति की कोई चिंता नहीं थी।

- **प्रश्न :**
  हॉर्टीकल्चर विभाग का जवाब व्यंग्यपूर्ण क्यों था?

- **उत्तर-**
  हॉर्टीकल्चर विभाग के सचिव ने जवाब दिया कि उनका विभाग 'पेड़ लगाओ' अभियान में जोर-शोर से जुटा हुआ है। ऐसे में किसी भी अधिकारी को पेड़ काटने की बात नहीं सोचनी चाहिए। जामुन फलदार पेड़ है। अत: फलदार पेड़ को काटने की अनुमति कदापि नहीं दे सकते। लेखक व्यंग्य करता है कि ऐसे अफसरों को अपनी नीतियों, फलों की अधिक चिंता रहती है, व्यक्ति की जान की नहीं।

CHAPTER : 9 - भारत माता

- **प्रश्न :**
  भारत की चर्चा नेहरू जी कब और किससे करते थे?

- **उत्तर-**
  भारत की चर्चा नेहरू जी देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर अपने सुनने वालों से किया करते थे। इस विषय की चर्चा ज्यादातर वे किसानों से करते थे। उन्हें लगता था कि किसानों को संपूर्ण भारत के बारे में जानकारी कम है तथा उनका दृष्टिकोण सीमित है। वे उन्हें हिंदुस्तान का नाम भारत देश के संस्थापक के नाम से परंपरा से चला आ रहा है। इस देश का एक हिस्सा दूसरे से अलग होते हुए भी देश एक है। इस भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए आंदोलन की प्रेरणा देते थे।

- **प्रश्न :**
  नेहरू जी भारत के सभी किसानों से कौन-सा प्रश्न बार-बार करते थे?

- **उत्तर-**
  नेहरू जी भारत के सभी किसानों से निम्नलिखित प्रश्न बार-बार करते थे-

- **(क)** वे 'भारत माता की जय' से क्या समझते हैं?
  (ख) यह भारत माता कौन है?
  (ग) वह धरती कौन-सी है जिसे वे भारत माता कहते हैं-गाँव की, जिले की, सूबे की या पूरे हिंदुस्तान की?

- **प्रश्न :**
  भारत माता के प्रति नेहरू जी की वया अवधारणा थी?

- **उत्तर-**
  नेहरू जी की अवधारणा थी कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। देश का हर हिस्सा- नदी, पहाड़, खेत आदि सभी इसमें शामिल हैं। दरअसल भारत में रहने वाले करोड़ों लोग हैं, 'भारत माता की जय' का अर्थ है-करोड़ों भारतवासियों की जय। इस धारणा का अर्थ है-देशवासियों से ही देश बनता है।

- **प्रश्न :**
  'भारत माता' पाठ का प्रतिपाद्य बताइए।

- **उत्तर-**
  'भारत माता' अध्याय हिंदुस्तान की कहानी का पाँचवाँ अध्याय है। इसमें नेहरू ने बताया है कि किस तरह देश के कोने-कोने में आयोजित जलसों में जाकर वे आम लोगों को बताते थे कि अनेक हिस्सों में बँटा होने के बाद भी हिंदुस्तान एक है। इस अपार फैलाव के बीच एकता के क्या आधार हैं और क्यों भारत एक देश है, जिसके सभी हिस्सों की नियति एक ही तरीके से बनती-बिगड़ती है। उन्होंने भारत माता शब्द पर भी विचार किया तथा यह निष्कर्ष निकाला कि भारत माता की जय का मतलब है यहाँ के करोड़ों-करोड़ लोगों की जय।

- **प्रश्न :**
  लेखक गाँवों व शहरों में अपने भाषणों में क्या अंतर रखते थे?

- **उत्तर-**
  लेखक देश भर में भ्रमण कर जगह-जगह भाषण देते थे। शहरों में उनके भाषणों का विषय अलग होता था। शहरी लोग शिक्षित व समझदार होते थे। उनकी समस्याएँ भी भिन्न प्रकार की होती थीं। वहाँ नेहरू जी विकास या स्वतंत्रता संबंधी बातें करते थे। गाँव में लोग अनपढ़ या कम पढ़े-लिखे होते थे। उनका दायरा भी सीमित होता था तथा वे संकीर्ण मानसिकता के थे। देहातों में नेहरू विदेशों की चर्चा करते थे। उन्हें यह समझाते थे कि वे देश का ही एक हिस्सा है। वे देश की एकता पर बल देते थे।

वितान भाग 1
CHAPTER:1-भारतीय गायिकाओं में बेजोड़ : लता मंगेशकर

- **प्रश्न :**
लेखक ने लता की गायकी की किन विशेषताओं को उजागर किया है? आपको लता की गायकी में कौन-सी विशेषताएँ नजर आती हैं? उदाहरण सहित बताइए।

- **उत्तर –**
लेखक ने लता की गायकी की निम्नलिखित विशेषताओं को उजागर किया है
- **सुरीलापन**-लता के गायन में सुरीलापन है। उनके स्वर में अद्‌भुत मिठास, तन्मयता, मस्ती तथा लोच आदि हैं, उनका उच्चारण मधुर गूंज से परिपूर्ण रहता है।
- **स्वरों की निर्मलता**-लता के स्वरों में निर्मलता है। लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है, वही उसके गायन की निर्मलता में झलकता है।
- **कोमलता और मुग्धता**-लता के स्वरों में कोमलता व मुग्धता है। इसके विपरीत नूरजहाँ के गायन में मादक उत्तान दिखता था।
- **नादमय उच्चार**-यह लता के गायन की अन्य विशेषता है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। ऐसा लगता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं। लता के गानों में यह बात सहज व स्वाभाविक है।
- **शास्त्र-शुद्धता**-लता के गीतों में शास्त्रीय शुद्धता है। उन्हें शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी है। उनके गीतों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होने के साथ-साथ रंजकता भी पाई जाती है। हमें लता की गायकी में उपर्युक्त सभी विशेषताएँ नजर आती हैं। उन्होंने भक्ति, देश-प्रेम, श्रृंगार तथा विरह आदि हर भाव के गीत गाए हैं। उनका हर गीत लोगों के मन को छू लेता है। वे गंभीर या अनहद गीतों को सहजता से गा लेती हैं। एक तरफ 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत से सारा देश भावुक हो उठता है तो दूसरी तरफ 'दिलवाले दुल्हनियाँ ले जाएँगे।' फिल्म के अलहड़ गीत युवाओं को मस्त करते हैं। वास्तव में, गायकी के क्षेत्र में लता सर्वश्रेष्ठ हैं।

- **प्रश्न :**
लता ने करुण रस के गानों के साथ न्याय नहीं किया है, जबकि श्रृंगारपरक गाने वे बड़ी उत्कटता से गाती हैं-इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं?

- **उत्तर –**
एक संगीतज्ञ की दृष्टि से कुमार गंधर्व की टिप्पणी सही हो सकती है, परंतु मैं इस कथन से सहमत नहीं हूँ। लता ने करुण रस के गाने भी बड़ी उत्कटता के साथ गाए हैं। उनके गीतों में मार्मिकता है तथा करुणा छलकती-सी लगती है। करुण रस के गाने आम मनुष्य से सीधे नहीं जुड़ते। लता के करुण रस के गीतों से मन भावुक हो उठता है। 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत से पं जवाहरलाल नेहरू की आँखें भी सजल हो उठी थीं। फिल्म 'रुदाली' का गीत 'दिल हूँ-हूँ करे' विरही जनों के हृदय को बींध-सा देता है। इसी तरह 'ओ बाबुल प्यारे' . गीत में नारी-मन की पीड़ा को व्यक्त किया है। अत: यह सही नहीं है कि लता ने करुण रस के गीतों के साथ न्याय नहीं किया है।

- **प्रश्न :**
  शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत में क्या अंतर है?

- **उत्तर –**
  शास्त्रीय संगीत और चित्रपट संगीत-दोनों का लक्ष्य आनंद प्रदान करना है, फिर भी दोनों में अंतर है। शास्त्रीय संगीत में गंभीरता अपेक्षित होती है। यह इसका स्थायी भाव है, जबकि चित्रपट संगीत का गुणधर्म चपलता व तेज लय है। शास्त्रीय संगीत में ताल अपने परिष्कृत रूप में पाया जाता है, जबकि चित्रपट संगीत का ताल प्राथमिक अवस्था का ताल होता है शास्त्रीय संगीत में तालों का पूरा ध्यान रखा जाता है, जबकि चित्रपट संगीत में आधे तालों का उपयोग होता है। चित्रपट संगीत में गीत और आघात को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है, सुलभता तथा लोच को अग्र स्थान दिया जाता है। शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी होना आवश्यक है। तीन-साढ़े तीन मिनट के गाए हुए चित्रपट के किसी गाने का और एकाध खानदानी शास्त्रीय गायक की तीन-साढे तीन घटे की महफिल का कलात्मक व आनंदात्मक मूल्य एक ही है।

- **प्रश्न :**
  लय कितने प्रकार की होती है?

- **उत्तर –**
  लय तीन प्रकार की होती है-
- **विलंबित लय**– यह धीमी होती है।
- **मध्य लय**– यह बीच की होती है।
- **द्रुत लय**– यह मध्य लय से दुगुनी तथा विलबित लय से चौगुनी तेज होती है।

CHAPTER : 2 - राजस्थान की रजत बूँदें

- **प्रश्न :**
राजस्थान में कुंई किसे कहते हैं? इसकी गहराई और व्यास तथा सामान्य कुओं की गहराई और व्यास में क्या अंतर होता है?

- **उत्तर –**
राजस्थान के रेतीले इलाके में पीने के पानी की बड़ी भारी समस्या है। वहाँ जमीन के नीचे खड़िया की कठोर परत को तलाशकर उसके ऊपर गहरी खुदाई की जाती है और विशेष प्रकार से चिनाई की जाती है। इस चिनाई के बाद खड़िया की पट्टी पर रेत के कणों में रिस-रिसकर जल एकत्र हो जाता है। इस पेय जल आपूर्ति के साधन को कुंई कहते हैं। इसका व्यास बहुत छोटा और गहराई तीस-पैंतीस हाथ के लगभग होता है। कुओं की तुलना में इसका व्यास और गहराई बहुत ही कम है। राजस्थान में कुओं की गहराई डेढ़ सौ/दो सौ हाथ होती है और कुआँ भू-जल को पाने के लिए बनता है। उस पर उसका पानी भी खारा होता है। कुंई इससे बिलकुल अलग कम गहरी, संकरे व्यासवाली होती है। इसका जल खड़िया की पट्टी पर रिस-रिसकर गिरनेवाला जल है। यह जल मीठा, शुद्ध और रेगिस्तान के मूल निवासियों द्वारा खोजा गया अमृत है।

- **प्रश्न :**
  कुंई निर्माण से संबंधित निम्न शब्दों के बारे में जानकारी प्राप्त करें-पालरपानी, पातालपानी, रेजाणीपानी।

- **उत्तर –**
  पालरपानी-बरसाती पानी, वर्षा का जल जिसे इकट्ठा करके रख लिया जाता है और साफ़ करके प्रयोग में लाया जाता है। पातालपानी–वह जल जो दो सौ हाथ नीचे पाताल में मिलता है। यह जल ज्यादातर खारा होता है। रेजाणीपानी-रेत के कणों की गहराई में खड़िया की पट्टी के ऊपर कुंई में रिस-रिसकर एकत्र होनेवाला पानी रेजाणीपानी कहलाता है।

- **प्रश्न :**
कुंई का मुँह छोटा क्यों रखा जाता है? स्पष्ट करें?

- **उत्तर –**
कुंई का मुँह छोटा रखा जाता है। इसके तीन कारण प्रमुख हैं
- रेत में जमी नमी से पानी की बूंदें धीरे-धीरे रिसती हैं। दिनभर में एक कुंई में मुश्किल से दो-तीन घड़े पानी जमा होता है। कुंई के तल पर पानी की मात्रा इतनी कम होती है कि यदि कुंई का व्यास बड़ा हो तो कम मात्रा का पानी ज्यादा फैल जाएगा। ऐसी स्थिति में उसे ऊपर निकालना संभव नहीं होगा। छोटे व्यास की कुंई में धीरे-धीरे रिस कर आ रहा पानी दो-चार हाथ की ऊंचाई ले लेता है।
- कुंई के व्यास का संबंध इन क्षेत्रों में पड़ने वाली तेज गर्मी से भी है। व्यास बड़ा हो तो कुंई के भीतर पानी ज्यादा फैल जाएगा और भाप बनकर उड़ने से रोक नहीं पाएगा।
- कुंई को और उसके पानी को साफ रखने के लिए उसे ढककर रखना जरूरी है। छोटे मुँह को ढकना सरल होता है। कुंई पर लकड़ी के ढक्कन, खस की पट्टी की तरह घास-फूस या छोटी-छोटी टहनियों से बने ढक्कनों का प्रयोग किया जाता है।

- **प्रश्न :**कुंई की खुदाई किससे की जाती है?

- **उत्तर –**
  कुंई का व्यास बहुत कम होता है। इसलिए इसकी खुदाई फावड़े या कुल्हाड़ी से नहीं की जा सकती। बसौली से इसकी खुदाई की जाती है। यह छोटी डंडी का छोटे फावड़े जैसा औजार होता है जिस पर लोहे का नुकीला फल तथा लकड़ी का हत्था लगा होता है।

CHAPTER : 3 - आलो-आँधारि

- **प्रश्न :**
'आलो-आँधारि' रचना बेबी की व्यक्तिगत समस्याओं के साथ-साथ कई सामाजिक मददों को समेटे है। किन्हीं दो मुख्य समस्याओं पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

- **उत्तर –**
'आलो-आँधारि' एक ऐसी रचना है जो बेबी हालदार की आत्मकथा होने के साथ-साथ एक अनदेखी दुनिया के दर्शन करवाती है। यह ऐसी दुनिया है जो हमारे पड़ोस में है, फिर भी हम इसमें झाँकना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। दो प्रमुख समस्याएँ निम्नलिखित हैं-
(क) परित्यक्ता स्त्री की स्थिति-इस रचना में बेबी एक परित्यक्ता स्त्री है। वह किराए के मकान में रहकर घरों में नौकरानी का काम करके गुजारा कर रही है। समाज का व्यवहार उसके प्रति कटु है। स्वयं औरतें ही उस पर ताना मारती हैं। हर व्यक्ति उस पर अपना अधिकार समझता है तथा उसका शोषण करना चाहता है। उसका मानसिक, शारीरिक व आर्थिक शोषण किया जाता है। उस पर तरह-तरह की वर्जनाएँ थोपी जाती हैं तथा सहायता के नाम पर उसका मजाक उड़ाया जाता है।
(ख) गंदी बस्तियाँ-इस रचना में गंदी बस्तियों के बारे में बताया गया है। घरेलू नौकर तंग बस्तियों में रहते हैं। वहाँ शौचालय की सुविधा भी नहीं होती। महिलाओं को इस मामले में भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है। नालियों, कूड़ेदानों आदि के निकट बसी इन बस्तियों में अनेक बीमारियाँ फैलने का भय रहता है। सरकार भी अपनी आँखें मूंदे रहती है।

कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन, **जनसंचार माध्यम और लेखन**

- **संचार के तत्त्व**
  स्रोत, एनकोडिंग, संदेश, माध्यम, प्राप्तकर्ता, फ़ीडबैक और शोर
- **संचार के प्रकार**
  सांकेतिक संचार
  मौखिक और अमौखिक संचार
  अंतःवैयक्ति संचार
  अंतरवैयक्ति संचार
  समूह संचार
  जनसंचार
- **जनसंचार की विशेषताएँ**
- **संचार के कार्य**
- **जनसंचार के कार्य**
  सूचना देना, शिक्षित करना, मनोरंजन करना
  एजेंडा तय करना
  निगरानी करना
  विचार-विमर्श के मंच
- **भारत के जनसंचार माध्यमों का विकास**
  समाचार-पत्र-पत्रिकाएँ
  रेडियो
  टेलिविज़न
  सिनेमा
  इंटरनेट
- **जनसंचार माध्यमों का प्रभाव**

- **जनसंचार की विशेषताएँ**

- जनसंचार की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-
- जनसंचार माध्यमों के जरिये प्रकाशित या प्रसारित संदेशों की प्रकृति सार्वजनिक होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि अंतरवैयक्तिक या समूह संचार की तुलना में जनसंचार के संदेश सबके लिए होते हैं।
- जनसंचार का संचार के अन्य रूपों से एक फ़र्क यह भी है कि इसमें संचारक और प्राप्तकर्ता के बीच कोई सीधा संबंध नहीं होता है।
- जनसंचार के लिए एक औपचारिक संगठन की भी जरूरत पड़ती है। औपचारिक संगठन के बिना जनसंचार माध्यमों को चलाना मुश्किल है। जैसे समाचारपत्र किसी न किसी संगठन से प्रकाशित होता है या रेडियो का प्रसारण किसी रेडियो संगठन की ओर से किया जाता है।
- जनसंचार माध्यमों ढेर सारे द्वारपाल (गेटकीपर) काम करते हैं। द्वारपाल वह व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह है जो जनसंचार माध्यमों से प्रकाशित या प्रसारित होने वाली सामग्री को नियंत्रित और निर्धारित करता है।

- **पत्रकारिता के सोपान**

- इसके निम्नलिखित तीन सोपान हैं-
- समाचारों को संकलित करना।
- उन्हें संपादित कर छापने लायक बनाना!
- पत्र या पत्रिका के रूप में छापकर पाठकों तक पहुँचाना।

- **प्रश्न :**
डीकोडिंग का अर्थ बताइए।

- **उत्तर –**
इसका अर्थ है-प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने की कोशिश। यह एनकोडिंग से उलटी प्रकिया है। इसमें संदेश प्राप्तकर्ता प्राप्त चिहनों व संकेतों के अर्थ निकालता है।

- **प्रश्न :**
फीडबैक किसे कहते हैं?

- **उत्तर –**
संचार प्रक्रिया में संदेश प्राप्तकर्ता द्वारा दर्शाई गई प्रतिक्रिया को फीडबैक कहते हैं। यह सकारात्मक या नकारात्मक दोनों ही हो सकती है।

- **प्रश्न :**
शोर क्या है?

- **उत्तर –**
संचार प्रक्रिया में आने वाली बाधाओं को शोर कहते हैं। यह शोर मानसिक से लेकर तकनीकी और भौतिक हो सकता है। इसके कारण संदेश अपने मूल रूप में प्राप्तकर्ता तक नहीं पहुँच पाता।

- **प्रश्न**
  पी. सी. जोशी समिति ने दूरदर्शन के कौन-कौन से उददेश्य बताए?

- **उत्तर –**
  पी. सी. जोशी समिति का गठन 1980 में इंदिरा गाँधी ने दूरदर्शन के कार्यक्रमों की गुणवत्ता को सुधारने के लिए किया था। इस कमेटी ने दूरदर्शन के निम्नलिखित उद्देश्य बताए
- सामाजिक परिवर्तन
- राष्ट्रीय एकता
- वैज्ञानिक चेतना का विकास
- परिवार कल्याण
- कृषि विकास
- पर्यावरण संरक्षण
- सामाजिक विकास

पत्रकारिता के विविध आयाम

- **प्रश्न :**
  समाचार के तत्व बताइए।

- **उत्तर –**
  समाचार के निम्नलिखित तत्व होते हैं-
- नवीनता
- निकटता
- प्रभाव
- जनरुचि
- टकराव
- महत्त्वपूर्ण लोग
- उपयोगी जानकारियाँ
- अनोखापन
- पाठक वर्ग
- नीतिगत ढाँचा

- **प्रश्न :**
  निम्न पर टिप्पणी कीजिए-
  (क) फोटो पत्रकारिता
  (ख) कार्टून कोना
  (ग) रेखांकन और काटोग्राफ

- **उत्तर –**
  (क) फोटो पत्रकारिता-आजकल अखबारों में फोटो का प्रचलन बढ़ रहा है। फोटो टिप्पणियों का असर व्यापक होता है। एक चित्र कई हजार बातें कह जाता है।
  (ख) कार्टून कोना-यह आम आदमी की भावनाओं को व्यक्त करने का सीधा तरीका है। यह हर समाचार-पत्र में होता है। कार्टून पहले पन्न पर प्रकाशित होने वाले हस्ताक्षरित संपादकीय है।
  (ग) रेखांकन और काटीग्राफ-रेखांकन समाचारों की रोचक बनाते हैं। काटीग्राफी का प्रयोग टेलीविजन में भी होता है। क्रिकेट के स्कोर से लेकर सेंसेक्स के आँकड़ों को ग्राफ से बताते हैं।

- **प्रश्न :**
  वॉचडॉग पत्रकारिता क्या है?

- **उत्तर –**
  वह पत्रकारिता जो सरकार के कामकाज पर निगाह रखती है और गड़बड़ियों का पर्दाफाश करती है, वॉचडॉग पत्रकारिता कहलाती है। ऐसी पत्रकारिता सरकारी समाचारों की आलोचना भी करती है।
- **प्रश्न :**
  एडवोकेसी पत्रकारिता पर टिप्पणी कीजिए।

- **उत्तर –**
  ऐसी पत्रकारिता जो किसी विचाराधारा उद्देश्य या मुद्दे को उठाकर जनमत तैयार करती है, एडवोकेसी पत्रकारिता कहलाती है। जेसिका लाल हत्याकांड, रुचिका कांड में न्याय के लिए समाचार माध्यमों ने सक्रिय भूमिका निभाई।